

योः ऋत्. 23. त्रयो ऽप्येते M. 2, 39. त्रिष्वप्येतेषु 4, 193. त्रयो ऽपि ते Vid. 81. तेषां त्वयवान्मूदमान्पक्षामप्यमितेजसाम् M. 1, 16. H. 73. 549. 863. पक्षैतान्यपि (mit verstelltem ऋपि) Hir. Pr. 26. Statt des einfachen ऋपि trifft man auch ऋपि च und ऋपि चैव an: त्रयाणामपि चैतेषां गुणानाम् M. 12; 30. 34. चतुर्णामपि चैतेषाम् 4, 8. 9, 236. चतुर्भिरपि चैवैते: 6, 91. Zum Ueberfluss erscheint ऋपि auch nach उभ, उभय und da, wo das Zahlwort von सर्व begleitet ist: उभाचामपि M. 10, 82. Daç. 2, 36. Çāk. 109, 16. P. 1, 1, 57, Sch. उभावपि हि तौ धर्मौ M. 2, 14. 8, 377. 10, 68. Ver. 27, 16. उभयमपि Çāk. 97, 4. सर्वेष्वेव चतुर्ष्वपि M. 3, 135. सर्वमप्येतत्प्रयुञ्जीत चतुष्टयम् (ऋपि nicht beim Zahlwort, sondern bei सर्व) 8, 130. Nach सर्व hebt ऋपि oder ऋपि च die Gesamtheit stärker hervor: एतेषां सर्वेषामपि M. 3, 193. 6, 88. 89. 9, 188. 202. 10, 95. 12, 84. 85. Vid. 70. Dieselbe Kraft hat ऋपि auch nach अशेषतः M. 8, 37. Vielleicht ist auch hierher zu ziehen: अन्ये ऽपि alle andern, die übrigen Vid. 196. अन्येषामपि der übrigen Siddh. K. zu P. 1, 2, 36. परे ऽपि die übrigen H. 131. und sogar N. 20, 13: त्वमिव यत्ता नान्यो ऽस्ति पृथिव्यामपि (auf der ganzen Erde). Im letzten Beispiel können wir uns allenfalls auch mit ऋपि sogar zufriedenstellen. — 10) Fragepartikel am Anfange eines Satzes: ऋपि मां व्यसनदस्मात्सुगोराद् इदृष्यति R. 5, 33, 34. 38. 1, 51, 4. ऋपि संनिहितो ऽत्र कुलपतिः Çāk. 7, 14. ऋपि तपो वर्धते 12, 20. ऋप्यस्ति शकुन्तलादर्शनं कुतूहलम् 29, 4. ऋपि निर्विघ्नतपसो मुनयः 64, 17. ऋपि न ज्ञानासि Dhūrtas. 68, 11. Dies ist das ऋपि प्रश्ने AK. 3, 4, 32, (Col. 28,) 10. H. an. 7, 34. Mēd. avj. 47. Mitten im Fragesatz etwa: अज्ञस्यं त्रूपे किमपि सिद्धेकम् RV. 1, 164, 6. — 11) am Anfange des Satzes mit einem potent. ach wenn doch: ऋपि नः स कुले जायाद्यो नो दद्यात्त्रयोदशमि M. 3, 274. ऋपि मे देवताः कुर्युरिमं सत्यं मनोरथम् R. 2, 88, 24. ऋपि नान्यो भवेतां नो रुदता तावन्नीहपाशः 46, 6. 51, 19. 53, 15. 86, 19. ऋपि नो भागधेयं स्यात् N. 8, 6. Vielleicht ist R. 3, 19, 13. zu lesen: ऋपि अमो न वैदेहो वाधते (st. बाधते) रघुनन्दन । सीता हि सुकुमारराज्ञी सुखैश्च न विनाकृता ॥ Dieses ist wohl das mit उत gleiche Bedeutung habende ऋपि P. 3, 3, 152. Der Sch. erklärt ऋप्यधीयते und उताधीयते durch वाचनद्येप्यते. Vop. 25, 16. wird als Beispiel angeführt: ऋपि रुन्दाद्यं शंभुस्तु दुःखं ज्ञेयदज्ञः. — 12) bei einer freundlichen Aufforderung (अन्वयसर्गं) P. 1, 4, 96. ऋपि सिद्ध । ऋपि स्तुहि Sch. कामकारक्रियासु Mēd. avj. 48. क्रियाकारक्रियासु H. an. 7, 34. — 13) ऋपि नाम am Anfange eines Satzes vielleicht: ऋपि नामायमारम्भः क्षितिपतेर्यक्रस्य चारुदत्तस्य जीवितेन सफलः स्यात् Mēd. avj. 174, 3. ऋपि नाम कुलपतेरियमसवर्णनेत्रसंभवा स्यात् Çāk. 11, 10. ऋपि नाम मृगतृष्णिकेव नाममात्रप्रस्तात्वा मे विषादाय कल्पते (कल्पते) 105, 8. ततो मया चिन्तितम् । ऋपि नामैषा पुस्तकभारवाहिनो मे ज्ञास्यति तन्नम् Prab. 107, 7. अन्वयेषां नाम — दरिद्रः प्रेष्यः परत्र फलमिच्छति Mēd. avj. 125, 13. Ist dies etwa das ऋपि शङ्कायाम् AK. 3, 4, 32, (Col. 28,) 10. H. an. 7, 33. Mēd. avj. 47? — 14) ऋपि तु = किं तु Trik. 3, 4, 4. sondern: येदेते साधूनामुपरि विमुखाः सन्ति धानिनो न चैषावज्ञेषामपि तु निजवित्तव्ययभयम् Çāntiç. 3, 23. — 15) P. 1, 4, 96. wird ऋपि unter Anderem auch पदार्थे, d. i. im Sinne eines zu ergänzenden Wortes (युक्तपदार्थे) H. an. 7, 34. Mēd. avj. 48.) ein Karmapravakantja genannt. Der Sch. führt als Beispiel auf: सर्पिषो ऽपि स्यात्, was er durch सर्पिषो विन्दुरपि स्यात् es wird doch wohl etwas geklärte Butter da sein erklärt.

अपिकर्तृ (अपि + कर्त्त) m. 1) die Gegend der Achselgruben und Schulterblätter (zunächst an Zug- und Lastthieren) Mantra. zu VS. 9, 14. (वाजी) ग्रीवायां बद्धा अपिकर्तृ आसनि RV. 4, 40, 4. पत्नेर्भिरपिकर्तृभिर्त्राभि सं र्भामहे 10, 134, 7. — 2) N. pr. eines Mannes: अपिकर्ता: die Nachkommen des A. Verz. d. B. H. 55, 5.

अपिकर्तृ (von अपिकर्त्त) adj. in der Gegend der Achselgruben befindlich RV. 1, 117, 22.

अपिकर्णो (अपि + कर्ण) n. die Gegend des Ohres: शंसिषं नु ते अपिकर्णो RV. 6, 48, 6; vgl. auch 10, 46, 4, wo vielleicht ursprünglich अपिकर्णो stand.

अपिगीर्णो (von गूरु mit अपि) adj. gepriesen AK. 3, 2, 59.

अपिगृह्य (von ग्रह् mit अपि) adj. P. 3, 1, 118. Vop. 26, 19. तस्मान्नापिगृह्यम् P., Sch. ved. Vārtt.

अपिग्राह्य (wie eben) adj. klass. = अपिगृह्य ved. P. 3, 1, 118, Vārtt. Vop. 26, 19.

अपिर्ज्ञ (von जन् mit अपि) adj. ἐπίγονος, nachgeboren, hinzugeboren VS. 9, 20. 18, 28. 22, 32.

अपिर्त्त (3. अ + पित् von पि = पिन्व् adj. nicht schwellend, vertrocknet: अपिर्न्वतमपित्: पिन्वत्तं धियः RV. 7, 82, 3.

अपितु s. अपि 14.

अपित्वं (von अपि) n. Beteiligung, Antheil: तस्यामपित्वमीषते Çat. Br. 1, 8, 4, 8. सा हेयं देवेषु सुत्यायामपित्वमीषे ऽस्त्वैव मेऽपि प्रसुते भाग इति 4, 1, 2, 6. कृतास्मिन्नपित्वमिच्छा इति 3, 11.

अपित्विनं (von अपित्व) adj. theilhaftig, Antheil habend: यदा अनादिष्टं देवतायै कृत्विगृह्यते सर्वा वै तस्मिन्नेवृता अपित्विन्यो मन्यन्ते Çat. Br. 1, 8, 3, 24. तेष्वपित्वो भवति 9, 1, 3, 3, 8. देवलोके मे ऽप्यसदिति वै यज्ञते यो यज्ञते तदेवलोके एवैनमेतदपित्विनं करोति 1, 16. 4, 3, 4, 20, 27.

अपिधानं (von धा, दधाति mit अपि) n. = पिधान Vop. 3, 171. 1) das Bedecken AK. 1, 1, 2, 14. H. 1477. Kārt. Çr. 9, 10, 4. — 2) Bedeckung, Hülle, Decke: त्वमपिधानोवृषोः RV. 1, 51, 4. 162, 13. AV. 7, 35, 3. इयमेव पृथिवी कुम्भी भवति राध्यमानस्यैदानस्य द्यौरपिधानम् 11, 3, 1, 11. 18, 4, 53. संवत्सरो वै यज्ञः प्रजापतिः । तस्यैतद्द्वारं यदमावास्या चन्द्रमा एव द्वारपिधानः Çat. Br. 11, 1, 1, 1. (गुहा) शिलापिधाना adj. f. R. 3, 76, 35. नैकज्ञलदृक्त्रापिधानं जगत् Mēd. avj. 85, 4. Uebertr.: त इमे सत्याः कामा अन्तापिधानास्तेषां सत्यानां सतामन्तमपिधानम् Khand. Up. 8, 3, 1.

अपिधानवत् (von अपिधान) adj. mit einer Decke versehen, verdeckt: गव्यं चिद्रूर्वमपिधानवत्तमपे जन् RV. 5, 20, 12.

अपिर्धै (von धा, दधाति mit अपि) m. Bedeckung: प्रिया अपिर्धैर्विनिषीष्ट मेधिर्: RV. 1, 127, 7.

अपिनद्ध s. नद्ध mit अपि.

अपिपास (von 3. अ + पिपासा) adj. von Durst befreit, befriedigt Çat. Br. 14, 7, 2, 28. Khand. Up. 3, 17, 6.

अपिप्राण (अपि + प्राण) adj. f. ई den Athem begleitend, mit jedem Athemzug verbunden: इयं सा वै अस्मे दीर्घितर्यत्रा अपिप्राणी च सर्दनी च भूयाः RV. 4, 186, 11.

अपिबद्ध (von बन्ध् mit अपि) adj. angebunden, befestigt: अभिज्ञानामि पृष्ठाणि तान्येवेमानि लहमण । अपिबद्धानि (Gorr.: अपि ब०) वैदेह्याः पूर्वं चैतानि कानने ॥ R. 3, 68, 42.